फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 232 अक्टूबर 2007

सौ वर्ष पूर्व प्रशान्त महासागर में एक द्वीप के सभ्यता से परे लोगों के अनुसार सामान्य व्यक्ति के सुफल जीवन के लिये एक सूर्योदय से एक सूर्यास्त के दौरान का समय पर्याप्त से अधिक है।

मजदूरों को दिखाना ही नहीं (8)

गुत्थी उत्पादन छिपाने की..... चोरी में चोरी

✱ कभी-कभार के शोषण की बजाय नियमित शोषण ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी वाली समाज व्यवस्थाओं का आधार होता है। नियमित शोषण के लिये शोषण-तन्त्र आवश्यक होते हैं। और चूँकि शोषितों द्वारा शोषण का विरोध स्वाभाविक है, किसी भी शोषण-तन्त्र को नियमित दमन की आवश्यकता होती है। शास्त्र और शस्त्र की जुगलबन्दी के संग पृथ्वी पर दमन-तन्त्रों का श्रीगणेश हुआ। दमन-तन्त्र का ही दूसरा नाम, अधिक प्रचलित नाम सरकार है। ✱ दमन-तन्त्र की विशेषता यह है कि यह खर्चा माँगता है। सरकार के खर्च का आदि-स्रोत टैक्स हैं और प्रकृति के बाद हाथ उत्पादन के आदि-स्रोत, इसीलिये कर = हाथ, कर = टैक्स। अधिक समय नहीं हुआ, महलों-किलों में रहने वाले राजा-सामन्त सरकार थे और भूदासों से उपज का छठा हिस्सा ($16^2/_3$%) वसूलने का कानून था। आज विधायक-सांसद-अधिकारी वाली सरकार के खर्च की पूर्ति के लिये कुल उत्पादन व खपत का आधे से ज्यादा हिस्सा लिया जाता है। ✱ भूदासों द्वारा अपनी उपज का $83^1/_3$% रखना कानून अनुसार था। उत्पादकता में छलाँगें लगी हैं और आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-दो प्रतिशत मजदूरों के हिस्से में आना कानून अनुसार है। बाकी के 98 प्रतिशत में शोषण-तन्त्र और दमन-तन्त्र में हिस्सा-बाँट होती है। ✱ प्रहरी, कोतवाल, मन्त्री द्वारा रिश्वत लेने के किस्से बहुत पुराने हैं। दरअसल दमन-तन्त्र रिश्वत की चर्बी के बिना चल ही नहीं सकते। इसलिये नगर-प्रान्त-देश के दायरों में कैद हो कर भ्रष्टाचार आदि को मूल समस्या मानना नादानी के सिवा और कुछ नहीं है। हाँ, गैर-कानूनी को मर्ज और कानून को दवा पेश कर कानून अनुसार दमन-शोषण को छिपाने का नुस्खा पुराना है, यह शुद्ध काँइयापन है। ✱ आज नई बात दमन-तन्त्र के संग-संग शोषण-तन्त्र में भी कानूनों का उल्लंघन, गैर-कानूनी कार्यों का बहुत-ही बड़े पैमाने पर होने लगना है। मण्डी-मुद्रा के साम्राज्य में कानूनों का यह अर्थहीन होना राजाओं-सामन्तों के अन्तिम चरण में कानूनों के अर्थहीन होने जैसा लगता है। *दिल्ली और इसे घेरे नोएडा, सोनीपत, बहादुरगढ़, गुड़गाँव, फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में कार्य करते 70-75 प्रतिशत मजदूरों को अब दस्तावेजों में दिखाना ही नहीं को विलाप की वस्तु की बजाय नई सम्भावनाओं से ओत-प्रोत के तौर पर देखना बनता है।*

मण्डी-मुद्रा की गतिक्रिया के चलते कानूनी/गैर-कानूनी में हुई इस उलट-फेर के सन्दर्भ में मालिक से दो-चार आने वाला हिस्सेदार से चन्द शेयरों वाला निदेशक से कर्ज पर टिकी फैक्ट्री-कंम्पनी की मुख्य कार्याधिकारी बनने की प्रक्रिया की संक्षिप्त चर्चा कर चुके हैं। कम्पनी के शिखर से, चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर-सी ई ओ से आरम्भ होती कम्पनी की चोरी मैनेजमेन्ट के निचले स्तर तक फैली होने को मालिकाने में आये इन परिवर्तनों से कुछ हद तक समझा जा सकता है। अब आइये इन तीस-चालीस वर्ष के दौरान उत्पादन क्षेत्र में हुये कुछ उल्लेखनीय बदलाओं पर चर्चा आरम्भ करें।

● कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन विनाश का वाहक है। इन दो सौ वर्षों में इसने पृथ्वी पर अनेकानेक सन्तुलनों-सामंजस्यों को तहस-नहस कर दिया है.... सम्पूर्ण के विनाश की ओर अग्रसर है। और, कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन मण्डी के लिये उत्पादन की धुरी है – यह उत्पादन दस्तकारों व किसानों द्वारा निजी व परिवार के श्रम द्वारा किया जाता हो चाहे मजदूर लगा कर किया जाता हो। सामाजिक मौत-सामाजिक हत्या के शिकार किसानों द्वारा रसायनों, परिवर्तित बीजों के संग भू-जल का, अपने तन-मन का निर्मम दोहन-शोषण इस कम में अधिक का परिणाम है।

कम लागत पर अधिक उत्पादन आकार-रफ्तार-मात्रा से घनिष्ठता से जुड़ा है। दस्तकारी और किसानी का सीमित आकार इनकी सामाजिक मौत बनता है। फैक्ट्रियों की बड़ी होती साइज.... कारखानों के बढते आकार, उत्पादन की बढती मात्रा, काम की तेज होती रफ्तार ने लंकाशायर-मैनचेस्टर-शेफ्फील्ड की कपड़ा और स्टील फैक्ट्रियों के दौर में ही सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने बाहुपाश में ले लिया था।

● उत्पादन क्षेत्र की ही तरह व्यापार व अन्य क्षेत्रों में लागत कम करने की प्रक्रिया ने आकार, मात्रा, रफ्तार बढाई हैं। यूरोप-उत्तरी अमरीका में दुकानों को विशाल व्यापारिक संस्थानों ने खदेड़ा। यहाँ भी अब मॉल-संस्कृति का ताण्डव आरम्भ हो गया है....और, बचे-खुचे विकृत रिश्तों को भी निगलने के लिये इन्टरनेट व्यापार, ई-व्यापार सामने खड़ा है।

– चिकित्सा क्षेत्र को अस्पतालों ने उद्योग बना दिया था। उपचार की इन फैक्ट्रियों ने वैद्य-डॉक्टर को शिल्पी से वरकर अथवा अधिकारी में बदला। कुर्सी-मेज रख कर हुनर के ज़रिये रोजी वाली चिकित्सकों की बची-खुची जगह को इलेक्ट्रोनिक्स लील रही है। इन्टरनेट के जरिये चिकित्सा, चेहराविहीन ई-चिकित्सा हमारे सम्मुख है.....

– सिनेमा, सरकस ने मनोरंजन को दस्तकारी से उद्योग में ला दिया था। फिर भी मनोरंजन क्षेत्र में दस्तकारी का दखल बना रहा। इलेक्ट्रोनिक्स का प्रवेश दस्तकारी वाले कलाकार-दर्शक के बीच के विकृत सम्बन्धों को भी पौंछ रहा है....

–प्रयोगशालायें और विश्वविद्यालय ज्ञान उत्पादन की फैक्ट्रियाँ बने। फिर भी अकड़ू शिल्पी-दस्तकार ज्ञानी अपनी छाप छोड़ते रहे हैं। इधर इलेक्ट्रोनिक्स का दखल ज्ञान के रूपों-क्षेत्रों में तेज परिवर्तन कर ज्ञान के शिल्प-स्वरूपों को संग्रहालयों की वस्तु बना रहा है। ज्ञान उत्पादन की फैक्ट्रियों में इस पैमाने पर तथा इस गति से ज्ञान पैदा किये जा रहे हैं कि उनसे परिचित रहना भी किसी के बस की बात नहीं रही, उन पर मनन-चिन्तन तो बीते जमाने का हो गया है। कम्प्युटर-इन्टरनेट से नहीं जुड़े हैं तो आप अनपढ हैं..... ज्ञान कोई नहीं छीन सकता वाली बातें आई-गई हो गई हैं, एक के बाद एक प्रकार के ज्ञान-हुनर का नाकारा-फालतू होना सामान्य बन गया है और यह हम में से कब-किसको नाकारा कर दे किसी को पता नहीं.....

प्रयोगशालाओं से सेनाओं को और फौजों से उद्योग में आये इलेक्ट्रोनिक्स ने हर क्षेत्र में प्रक्रियाओं को अति तीव्र गति प्रदान की है। कम्प्युटर-सैटेलाइट-इन्टरनेट हर क्षेत्र में मण्डी-मुद्रा की पूरी वीभत्सता को सामने ला रहे हैं।

● आकार-मात्रा-रफ्तार की प्रक्रिया ने उल्लेखनीय कारखानों में मजदूरों की सँख्या 10-20-30 हजार कर दी। यह तीस-चालीस वर्ष पहले की स्थिति है। फिर कारखानों के आकार और उनमें मजदूरों की सँख्या में एक उलट-सी प्रक्रिया नजर आती है। **(बाकी पेज दो पर)**

सेनाओं से उद्योगों में आये इलेक्ट्रोनिक्स का

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

निर्मल कलर क्रियेशन मजदूर : "प्लॉट 64 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते। प्रतिदिन 12 घण्टे की ड्युटी पर 30 दिन के 3000 रुपये। रजिस्टर में हस्ताक्षर 7 तारीख को करवा लेते हैं पर पैसे देते बहुत बाद में हैं – अगस्त के आज 23 सितम्बर तक नहीं दिये हैं। गाली देते हैं। निर्मल फैक्ट्री में 60 मजदूरों को पीने के लिये 12 घण्टे में सिर्फ दो जार पानी और वो भी खारा।"

श्याम मेटल्स वरकर : "प्लॉट 112 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में तनखा 2410 रुपये। हम 3510-4160 रुपये न्यूनतम वेतन की कहते हैं तो धमकाते हैं, भद्दा बोलते हैं, कहते है कि 2410 में करना है तो करो या फिर जाओ। सरकारी अधिकारी कम्पनी के आफिस से ही वापस चले जाते हैं।"

युनीक मोल्डिंग मजदूर : "20ए/4 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में मोल्डिंग तथा डीफ्लैशिंग विभागों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। महीने के तीसों दिन। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। स्थाई मजदूर 25 और ठेकेदार के जरिये रखे 125 हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 75 की नहीं – 15 महिला मजदूरों में किसी की नहीं। हैल्परों की तनखा 2600-3000 और ऑपरेटरों की 3200-4500 रुपये। जिनकी तनखा 3000 है पर ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं तो राशि 3510 के हिसाब से काटते हैं। सितम्बर में 15 दिन तो फैक्ट्री में पीने का पानी ही नहीं था – साहब से कहा तो बोले कि घर से लाया करो। फैक्ट्री में ***हैवल्स*** और ***ए बी बी*** का काम होता है।"

सेन्डेन विकास वरकर : "प्लॉट 65 सैक्टर-27ए स्थित फैक्ट्री में ***पूजा, फाइव एट, सुपिरियर*** ठेकेदार के जरिये हम 300 से ज्यादा मजदूर रखे हैं। ठेकेदारों द्वारा हर महीने ओवर टाइम के 10-20 घण्टे खा जाना तो सामान्य है, 40-50 घण्टे डकार जाते हैं, 100 घण्टे तक खा जाते हैं। सुपिरियर तो नब्बे प्रतिशत मजदूरों के ओवर टाइम के घण्टों में भारी गड़बड़ करती है। ई.एस.आई. कार्ड 100 को ही दिये हैं और पी.एफ. स्लिप किसी को नहीं दी है, ठेकेदार पी.एफ. नम्बर भी नहीं बताते। सुबह 6½ से साँय 3 वाली शिफ्ट में 7 बजे तो छूट ही जाते हैं परन्तु साँय 3 से रात 11½ वाली शिफ्ट में अगली सुबह 4½, 6½ तक जबरन रोकते हैं। फैक्ट्री में काम करते 70 स्थाई मजदूरों को चाय के लिये टैबल दी हैं और हमें नीचे जमीन पर बैठ कर चाय पीनी पड़ती है।"

इम्पीरियल ऑटो इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 94 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में सुपरवाइजर व स्टाफ के अन्य लोग ही कम्पनी ने स्वयं रखे हैं। उत्पादन कार्य से सीधे तौर पर जुड़े 1000 मजदूरों को ठेकेदारों के जरिये रखा है। फैक्ट्री में 11½-11½ घण्टे की दो शिफ्ट हैं और मजदूरों के दो समूह बना रखे हैं – 8½ रुपये प्रतिघण्टा ओवर टाइम वाले और 15 रुपये प्रतिघण्टा ओवर टाइम वाले। प्रतिदिन 3 घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं और 5 ठेकेदारों के जरिये रखे 800 वरकरों को इनके 25½ रुपये देते हैं तथा 7 ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों को 45 रुपये। हाँ, जुलाई से हैल्परों की तनखा 3510 रुपये है।"

सुपर ऑटो वरकर : "प्लॉट 13 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में स्टाफ के 20 लोग ही स्थाई हैं। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 150 तथा 450 कैजुअल वरकर हैं। छह सौ मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ज्यादा चोट लगने पर डॉ. मोंगा के चिकित्सालय ले जाते हैं। हैल्परों की तनखा 2200-2300 तथा 2600 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में ***होण्डा*** कार-स्कूटर के पुर्जे बनते हैं।"

युवा मोटर्स मजदूर : "28-29 नीलम-बाटा रोड़ पर ***हीरो होण्डा*** मोटरसाइकिल बिक्री केन्द्र पर हम 80 वरकर सुबह 8 से रात 7-8 बजे तक काम करते हैं। हमें 11-12 घण्टे रोज ड्युटी पर महीने के पहले 2554 रुपये देते थे और अब 3510 रुपये देने लगे हैं। ओवर टाइम के पैसे न पहले देते थे और न अब दे रहे।"

लार्सन एण्ड टूब्रो वरकर : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मात्र 66 स्थाई तथा 40-50 कैजुअल वरकर हैं। अधिकतर काम फैक्ट्री से बाहर करवाया जाता है। हम स्थाई मजदूरों ने तीन स्तर से प्रतिनिधि रख कर यूनियन को कम्पनी के माफिक नहीं होने दिया था पर इधर हम में तोड़-फोड़ कर मैनेजमेन्ट अपनी पसन्द के यूनियन लीडर लाने की जुगाड़ बिठा रही है। फैक्ट्री में स्टाफ के टॉयलेट बिलकुल साफ-सुथरे रहते हैं और मजदूरों के गन्दे। पीने के पानी की समस्या भी रहती है। सफाई तथा पानी के लिये हमें मैनेजमेन्ट को बार-बार बोलना पड़ता है।"

एस.एच. इंजिनियर्स मजदूर : "प्लॉट 33 गली 3, सरूरपुर गाँव में स्थित फैक्ट्री महीने-भर पहले ई-7 संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 में थी। मैं, दिनेश कुमार, प्रेस ऑपरेटर हूँ और 22 मई को पावर प्रेस से मेरी दो उँगली कटी तथा एक कुचली गई। उपचार के बाद मैं 13 जुलाई से फिर फैक्ट्री में काम करने लगा। क्षतिपूर्ति के लिये दावे के कागज पूरे करने के लिये मैंने 17 से 20 सितम्बर तक ई.एस.आई. लोकल ऑफिस-डिस्पैन्सरी-अस्पताल भागदौड़ की। फिर मैं 21 सितम्बर को फैक्ट्री पहुँचा तो मुझे ड्युटी पर लेने से इनकार कर दिया। पहले फैक्ट्री में 6 पावर प्रेस थी, अब 10 हैं और 60 मजदूर 12 घण्टे की एक शिफ्ट में काम करते हैं। हैल्परों की तनखा 2200-2400 तथा ऑपरेटरों की 3200-3600 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

श्याम टैक्स इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में पहली मंजिल पर धुलाई, रंगाई, डिस्पैच में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में 350 वरकर काम करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे 50 में हैल्परों की तनखा 1800 रुपये और 300 कैजुअल वरकरों की 2000 रुपये। अधिकतर की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। दूसरी मंजिल पर चैकिंग और फिनिशिंग मजदूरों की तनखा 2554 रुपये। तीसरी मंजिल पर सिलाई विभाग में 1000 मजदूर हैं – हैल्परों की तनखा 2554 रुपये और कारीगरों की 3500 से 4000 रुपये। वरकर लगातार फैक्ट्री में काम करते रहते हैं और कम्पनी कागजों में ब्रेक दिखाती रहती है।"

हिन्दुस्तान सिरिंज वरकर : "प्लॉट 178 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री के प्लान्ट 5 व 6 में पेशाब करने जाने से भी मना करते हैं। आठ घण्टे में 50 हजार पीस बनाने पड़ते हैं और मामूली-सी गलती पर असिस्टेन्ट मैनेजर गाली देता है। यह साहब कहता है कि गलती से ट्रक के नीचे क्यों नहीं आते।"

कटलर हैमर मजदूर : "20/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में सितम्बर के आरम्भ से सी-शिफ्ट का भोजन अवकाश का आधा घण्टा कम्पनी खा गई है। फैक्ट्री में बीड़ी पीने के लिये एक कमरा है पर इधर उसकी बिजली काट दी है और वहाँ बैठने नहीं दे रहे। कैन्टीन की चाय और भोजन बहुत खराब हैं। टॉयलेट बहुत गन्दे रहते हैं।"

श्री श्याम इन्डस्ट्रीज वरकर : "20/3 मथुरा रोड़ पर नारदर्न में 7 ई/1 स्थित फैक्ट्री में उपस्थित होने पर भी अनुपस्थित लगाते हैं.... इस प्रकार तनखा 4200 रुपये दिखाते हैं और देते 2800 हैं। इन 2800 में से फिर ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं।"

महारानी पेन्ट्स मजदूर : "सैक्टर-24 में प्लॉट 343, 344, 290, 287, 242, 169, 138, 137 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 150 से ज्यादा सफाई कर्मी तथा गार्ड हैं। सफाई कर्मियों को 10½ घण्टे रोज ड्युटी पर महीने के 3510 रुपये और गार्डों को 10½ घण्टे प्रतिदिन पर महीने के 3640 दे रहे हैं। उत्पादन कार्य से सीधे जुड़े मजदूरों ने काम बन्द कर 8 घण्टे प्रतिदिन पर महीने के 3510 रुपये लिये।"

मजदूरों को... *(पेज एक का शेष)*

दखल मजदूरों की सँख्या में भारी कटौती का एक कारक है। पर बात इतनी ही नहीं लगती।

इलेक्ट्रोनिक्स अपने संग कारखानों में उत्पादन की मात्रा और रफ्तार में बहुत ज्यादा वृद्धि लाया है। और, फैक्ट्री का आकार नहीं बढने-कम बढने-सिकुड़ने का मुख्य कारण है अधिकाधिक कार्य बाहर करवाना, अनेक इकाईयों में करवाना, "जमाना वैन्डरों का है"। इसे यह कहना अधिक उचित होगा कि एक पूर्ण उत्पाद के लिये अनेक कारखानों को अपने में समेटती बहुत विशाल फैक्ट्री हमारे सम्मुख है। (जारी)

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

गुड़गाँव से ..... (पेज चार का शेष)

की तनखा 2250 रुपये और कारीगरों को 8 घण्टे के 120 रुपये।" ***ईस्टर्न मेडिकेट वरकर :*** "195, 196, 205 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्रियों में ओवर टाइम 15 रुपये प्रतिघण्टा था पर जुलाई से 3510-4160 रुपये न्यूनतम वेतन लागू होने पर ओवर टाइम के पैसे घटा कर 12-13 रुपये प्रतिघण्टा कर दिये हैं।" ***वी एण्ड एस मजदूर:*** " 363 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 500 वरकर सुबह 9 से रात 8 तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे $11^{3}/_{4}$-12 रुपये प्रतिघण्टा। ई.एस.आई. व पी.एफ. स्थाई मजदूरों के ही। हैल्परों को जुलाई की तनखा 2554 रुपये दी – अगस्त की तनखा आज 28 सितम्बर तक नहीं दी है।" ***वीवा ग्लोबल वरकर :*** "413 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री से 25 सितम्बर को 400 मजदूर निकाल दिये, अब 250 बचे हैं। अगस्त की तनखा हैल्परों को 2554 और कारीगरों को 3000-3200 रुपये दी।" ***हारमोनियस एक्सपोर्ट मजदूर :*** "730 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में अगस्त की तनखा हैल्परों को 2400 रुपये और कारीगरों को 4200 रुपये.... लेकिन इन 4200 में से 1200 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम से काट लिये। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते, पी.एफ. नम्बर नहीं बताते।" ***चिन्टू क्रियेशन्स वरकर:*** "295 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 6 महीने होने से एक दिन पहले मैनेजमेन्ट स्वयं मजदूरों के इस्तीफे लिख लेती है जबकि वे वरकर फैक्ट्री में काम करते रहते हैं। फैक्ट्री में होते हैं पर दस्तावेजों में नहीं होते वाली स्थिति एक महीने रहती है और फिर नये कार्ड बना दिये जाते हैं।" ***उषा पाइप मजदूर :*** "451-2 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 250 वरकर सुबह 9½ से रात 8 तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अगस्त की तनखा हैल्परों को 2700-2800 और कारीगरों को 3000-3200 रुपये।" ***राधुनिक एक्सपोर्ट वरकर :*** "215 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 3510 और कारीगर की 3900 रुपये। फैक्ट्री में 600 मजदूर सुबह 9½ से रात 10½ तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से पर हस्ताक्षर करवाते हैं लेकिन देते सिंगल रेट से हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. मास्टर, सुपरवाइजर के हैं, मजदूरों के नहीं।" ***धीर इन्टरनेशनल मजदूर :*** "299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 700 वरकर प्रतिदिन सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम करते हैं। ओवर टाइम के 2 घण्टे का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी का सिंगल रेट से। अगस्त की तनखा हैल्परों को 2554 और कारीगरों को 3000 रुपये।" ***शिवांक उद्योग वरकर :*** "671-2 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 900 मजदूर सुबह 9 से रात 8 तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. आधे मजदूरों की ही। अगस्त की तनखा हैल्परों को 2554 रुपये और कारीगरों को 8 घण्टे के 120 रुपये के हिसाब से।" **शम्भू इन्टरप्राइजेज मजदूर** : "30 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 175 वरकर सुबह 8 से रात 9 तक तो रोज काम करते ही हैं, रात 12 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अगस्त की तनखा हैल्परों को 2554 और ठेकेदारों के जरिये रखे ऑपरेटरों को 2800-3000 रुपये।" ***एस एण्ड आर वरकर :*** " 298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 450 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में। दो घण्टों को ही ओवर टाइम कहते हैं और उनके पैसे भी सिंगल रेट से। हैल्परों को 10 घण्टे रोज पर महीने के 3510 रुपये।" ***कृष्णा लेबल मजदूर :*** " 162 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 500 वरकर सुबह 9 से सात 9 तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अगस्त की तनखा हैल्परों को 2554 और कारीगरों को 2800-3000 रुपये।" ***प्राफ्टी एक्सपोर्ट वरकर :*** "377 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर सुबह 9½ से रात 8-10 तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अगस्त की तनखा हैल्परों को 2200 रुपये और कारीगरों को 8 घण्टे के 110 रुपये के हिसाब से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 3 साल से काम कर रहों के भी नहीं।" ***ऋचा ग्लोबल मजदूर :*** "239 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को अगस्त की तनखा 2500-3000 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।" ***लारा इन्डस्ट्रीज वरकर :*** "155 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 25-30 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 700 वरकर। ई.एस.आई. व पी.एफ. स्थाई मजदूरों की ही। अगस्त की तनखा हैल्परों को 3000 रुपये।"

प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.07.2007 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3510 रुपये (8 घण्टे के 135 रुपये); अर्धकुशल अ 3640 रुपये (8 घण्टे के 140 रुपये); अर्धकुशल ब 3770 रुपये (8 घण्टे के 145 रुपये); कुशल श्रमिक अ 3900 रुपये (8 घण्टे के 150 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4030 रुपये (8 घण्टे के 155 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4160 रुपये (8 घण्टे के 160रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है। वैसे इन तनखाओं में मजदूर अपने बच्चों को ढँग का पाव-पाव दूध और माता-पिता को ढँग की दाल नहीं खिला सकते।

एक छोटा-सा कदम : अगर आपको ऊपर दर्शाये न्यूनतम वेतन नहीं दिये जा रहे तो कम्पनी-फैक्ट्री-कार्यस्थल का पता देते हुये इन साहबों को पत्र भेजें:

1. श्रीमान उप श्रम आयुक्त
   पुराना ए डी सी दफ्तर, सैक्टर-15ए
   फरीदाबाद – 121007
2. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
   30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ
3. श्रीमान श्रम मन्त्री,
   हरियाणा सचिवालय
   चण्डीगढ
4. श्रीमान मुख्य मन्त्री,
   हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ

दरारें और कोशिशें ..... (पेज चार का शेष)

फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये एक विभाग में रखे मजदूरों को अगस्त के 31 दिन के 3510 रुपये 14 सितम्बर को देने लगे तो वरकरों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। साप्ताहिक छुट्टी खा रहे थे, मजदूरों ने साप्ताहिक छुट्टी के संग महीने के 3510 रुपये देने को कहा।"

बिड़ला वी एक्स एल मजदूर : " 14/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में काम कर रहे 65 स्थाई तथा 450 कैजुअल वरकरों के सम्मुख कम्पनी ने अचानक 14 सितम्बर को अगले दिन से आठ दिन छुट्टी की सूचना टाँगी। हम ने कारण पूछा तो मैनेजमेन्ट ने बताया नहीं। फिर 15 सितम्बर को फैक्ट्री से मशीनें निकाले जाने की सूचना मिली तो हम स्थाई स्त्री व पुरुष मजदूर वहाँ पहुँचे और हम ने मशीनें निकालना रोक दिया। कम्पनी ने पुलिस बुला ली थी। इधर श्रम विभाग, पुलिस-प्रशासन अधिकारियों को शिकायतें करने के बाद हम 45 स्थाई स्त्री तथा 20 स्थाई पुरुष मजदूर अन्य कदमों के बारे में विचार-विमर्श कर रहे हैं।"

पैरामाउन्ट पोलीमर्स वरकर : "सैक्टर-59 पार्ट-बी झाड़सेंतली-जाजरू मार्ग स्थित फैक्ट्री में 12 सितम्बर को अगस्त की तनखा 25 स्थाई मजदूरों को 3510 व 3640 रुपये दी और 130 कैजुअल वरकरों को 2000 रुपये देने लगे। कैजुअलों ने पैसे नहीं लिये और काम बन्द कर दिया। तब कम्पनी के चेयरमैन ने पूरे स्टाफ के सामने कहा कि इस महीने 2000 रुपये ले लो, सितम्बर की तनखा सब को 3510 देंगे, मेरे ऊपर भरोसा रखो। मजदूरों ने बड़े साहब की बात मान ली। फिर 13 सितम्बर से साहब लोग एक-एक कैजुअल को बुला कर कह रहे हैं कि ऐसे काम बन्द करना नहीं चलेगा, कुछ पैसे बढायेंगे पर 3510 नहीं देंगे, चुपचाप ले लेना, काम करना है तो रहो अन्यथा जाओ।"

एशियन हैण्डीक्राफ्ट्स, 310 फेज 2, कारीगर की तनखा 3000 रुपये; ***ओरियन्ट क्राफ्ट,*** फेज 3, हैल्परों की तनखा 2554 और कारीगरों की 2800-3200 रुपये, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; ***उषा फैब,*** 435-6 तथा 451-2 फेज 3, हैल्परों की तनखा 2200 और कारीगरों की 3000-3100 रुपये; ***स्टिक पेन,*** 318 फेज 5, हैल्परों की तनखा 2000 रुपये; ***ओरचिड,*** 189 फेज 1, हैल्परों की तनखा 2554 रुपये; ***नाम नहीं लिखा,*** 318 फेज 2, हैल्परों को 8 घण्टे के 80 रुपये और कारीगरों को 110-115 रुपये; ***गौरव इन्टरनेशनल,*** 506 फेज 3, हैल्परों की तनखा 2500 और कारीगरों की 2900 रुपये; ***शिवम् इन्फ्राइट्री,*** डी-64 फेज 5, हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 2200-2300 और कारीगरों को 4500-4800 रुपये; ***नीति क्लोथिंग,*** 218 फेज 1, हैल्परों की तनखा 2554 और कारीगरों की 3100-3200 रुपये; ***भोरजी सुपरटैक,*** 272 फेज 2, ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2300-2400 और कारीगरों की 2700-2800 रुपये; ***गौरव,*** 633 फेज 5, हैल्पर की तनखा 2200 और कारीगर की 2800-3000 रुपये, अगस्त की तनखा 28 सितम्बर तक नहीं; ***लोगवैल फोर्ज,*** 116 फेज 1, ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2400-2800 रुपये; ***मोडलामा एक्सपोर्ट,*** 105, 184,200, 201 फेज 1, 3510-4160 रुपये न्यूनतम वेतन लागू नहीं, हर महीने 10-20 घण्टे ओवर टाइम के खा जाते हैं; ***स्टैन्डर्ड गोल्ड,*** 235 फेज 1, हैल्परों की तनखा 2350 और कारीगरों की 3000-3500 रुपये; ***गुलाटी रीटेल,*** 203 फेज1, हैल्परों की तनखा 2800-2900 रुपये, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; ***ज्योति एपरेल,*** 158-9 फेज 1, हैल्परों की तनखा 2200 रुपये और कारीगरों को 8 घण्टे के 110 रुपये; ***मोना डिजाइन,*** 146 फेज 1, हैल्परों की तनखा 2554 और कारीगरों की 3000-3300 रुपये, ई.एस.आई. व पी.एफ. एक तिहाई मजदूरों की; ***तारसा एक्सपोर्ट,*** 174 फेज 1, हैल्परों .....

दरारें और कोशिशें

गुड़गाँव से -

फैशन एक्सप्रेस मजदूर : "100 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री के गेट पर हम सोमवार, 24 सितम्बर को ड्युटी के लिये पहुँचे तो हम ने वहाँ तालाबन्दी की सूचना टँगी पाई। प्रबन्धकों ने हम मजदूरों पर कम्पनी का भविष्य अन्धकारमय करने के आरोप लगाये हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकरों को निकालने के बाद फैक्ट्री में हम 99 स्थाई मजदूर ही बचे – 47 महिला तथा 52 पुरुष। महिला मजदूरों से दुर्व्यवहार, सब मजदूरों से दुर्व्यवहार के खिलाफ हम स्थाई मजदूर एक यूनियन से जुड़े और जुलाई 06 में मैनेजमेन्ट को माँग-पत्र दिया था। हम में से कुछ को नौकरी से निकालने तथा कुछ से इस्तीफे लिखवाने के बावजूद कम्पनी हमारे आपस के तालमेल नहीं तोड़ सकी। इस वर्ष 20 मार्च को हम काम बन्द कर फैक्ट्री के अन्दर बैठ गये थे तब पुलिस की छत्रछाया में 8 अप्रैल को उपश्रमायुक्त की देखरेख में मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच समझौता हुआ था। और, फैशन एक्सप्रेस को नये नाम से अथवा नये सिरे से चलाने के लिये मैनेजमेन्ट ने कदम उठाने शुरू किये। इस सिलसिले में कम्पनी ने समझौते का पालन ही नहीं किया। फिर 23 जुलाई से सिलाई व फिनिशिंग मजदूरों को काम देना बन्द कर दिया – 20 पीस पर एक साथ कढाई करने वाली कम्प्युटर इम्ब्रांइड्री की बड़ी मशीन पर ही काम जारी रखा। जुलाई की तनखा नहीं दी.... श्रम विभाग में शिकायतों के बाद आधी तनखा 27 अगस्त को जा कर दी। अगस्त की और जुलाई की बकाया तनखा द्वारा हमें कमजोर कर अब तालाबन्दी की है।"

मैक एक्सपोर्ट वरकर : "143 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 1000 मजदूर सुबह 9 बजे काम आरम्भ करते हैं। शिफ्ट साँय 6 बजे समाप्त होती है पर तब काम छोड़ने पर महीने में 1000 रुपये काटने की धमकी देते हैं। प्रतिदिन 10 घण्टे की ड्युटी पर महीने के 3510 रुपये। रात को एक बजे तक काम करवाते हैं, भोजन के पैसे नहीं देते। डेढ सौ महिला मजदूरों को भी जबरन रात एक बजे तक रोक लेते हैं। साहब लोग गालियाँ देते हैं, इधर एक चैकर के थप्पड़ मारा।"

कोका कोला मजदूर : " 370-2 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूरों की ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और अगस्त की तनखा 2000 रुपये।"

न्यू लाइट वरकर : " 396 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर सुबह 9 से रात 9 और रात 8 से अगली सुबह 8 तक की दो शिफ्टों में हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी बहुत कम – 10 रुपये प्रतिघण्टा।"

मधु चावला डिजाइन मजदूर : "783 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 250 वरकर सुबह 9 से रात 8 बजे तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों ***(बाकी पेज तीन पर)***

नोएडा से -

नलिनी सिल्क मिल्स मजदूर : " ए-36 सैक्टर-111 नोएडा फेज-2 स्थित फैक्ट्री में भर्ती के समय हैल्पर की तनखा 3000 रुपये बताते हैं पर देते 2400 हैं, कारीगर की तनखा 3500 बताते हैं पर देते 3000 रुपये हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से तथा वह भी तीसरे महीने में जा कर। फैक्ट्री में 500 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस. आई. व पी.एफ. 200 के ही हैं। कैन्टीन नहीं है और कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय भी नहीं देती। नलिनी सिल्क में पीने का पानी खराब है और टॉयलेट गन्दे।"

मदरसन सुमी सिस्टम वरकर : "प्लॉट ए-15, सी-14, वाई-2 सैक्टर-6 नोएडा स्थित फैक्ट्रियों में सुबह 6 से 2.15, दोपहर 1.45 से रात 10, और रात 10 से अगले रोज सुबह 6 बजे की शिफ्ट हैं। दिन में आरम्भ होती दो शिफ्टों में लड़कियाँ तथा लड़के दोनों रहते हैं और तीसरी शिफ्ट में सिर्फ लड़के रहते हैं। ए-15 फैक्ट्री में 500-500 लड़कियाँ दो शिफ्टों में और 300-300 लड़के तीन शिफ्टों में थे – इधर कैजुअल वरकरों को फरीदाबाद में नई फैक्ट्री में भेज दिया है। सी-14 फैक्ट्री में 4000 मजदूर काम करते हैं और कम्पनी का मुख्यालय भी है। वाई-2 फैक्ट्री में 1400 लड़कियाँ और 1500 लड़के काम करते हैं। मदरसन फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूर बहुत कम हैं – वाई 2 फैक्ट्री में 200 लड़की और 100 लड़के ही स्थाई। नब्बे प्रतिशत मजदूर कैजुअल हैं। लड़कों का 8 महीने पूरे होने से पहले ब्रेक कर ही देते हैं और 6 महीने बाहर रख कर फिर दूसरे प्लॉट में रखते हैं। सामान्यतः लड़कियों का 3-4 साल तक ब्रेक नहीं करते पर कैजुअल वरकर ही रहती हैं, स्थाई नहीं करते।

" मदरसन फैक्ट्रियों में वाहनों के वायर हारनेस बनते हैं। हर दो माह में 15-20 दिन तो काम के लिये बहुत ज्यादा मारामारी होती है। सुबह 6 बजे काम में लगी लड़कियों से रात 10 बजे तक काम करवाते हैं। सुबह 6 बजे की ड्युटी के लिये 3½ -4 बजे उठना पड़ता है, नींद पूरी नहीं होती, पर कम्पनी मानती नहीं। शिफ्ट के बाद बस में बैठी लड़कियों को जबरन उठा कर फैक्ट्री में ले जाते हैं। बीमार होने पर भी छुट्टी नहीं देते। सुबह 6 बजे काम में लगे लड़कों को अगले दिन सुबह 6 बजे तक जबरन रोकते हैं और फिर दो-तीन घण्टे नहाने-धोने के दे कर 9 बजे ड्युटी आ जाने को बोलते हैं। उत्पादन से जुड़े सुपरवाइजरों की भी यही गत होती है। लड़कियों के महीने में 90 घण्टे और लड़कों के 175 घण्टे ओवर टाइम के हो जाते हैं लेकिन कम्पनी ओवर टाइम का एक घण्टा भी पे-स्लिप में नहीं दिखाती। अलग पर्ची बनाते हैं और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते हैं।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी.
फरीदाबाद—121001

पुनीत उद्योग मजदूर : "प्लॉट 37 ई सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ***पाँच भाई साबुन*** बनाते हम लोगों ने जुलाई की तनखा 3510 रुपये माँगी और कम्पनी जो 2554 रुपये दे रही थी उन्हें लेने से मना कर दिया। हमारा इनकार जारी रहा तब कम्पनी ने 23 अगस्त को 1000 रुपये 'एडवान्स' के तौर पर जोड़ कर दिये। हम ने अगस्त की तनखा 10 सितम्बर को 3510 रुपये ली और जिन 1000 को एडवान्स कहा गया था उन्हें कम्पनी ने जुलाई की तनखा का एरियर माना।"

एल्पिया पैरामाउन्ट प्लास्टिक वरकर : "प्लॉट 60 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में अगस्त की तनखा 10 सितम्बर को स्थाई मजदूरों को 3510 तथा 3640 रुपये दी और कैजुअल वरकरों को 2000 रुपये देने लगे तो कैजुअलों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। दूसरी शिफ्ट के कैजुअलों ने भी 2000 रुपये तनखा लेने से मना कर दिया। फिर 11 सितम्बर को सुबह 8½ बजे कैजुअल वरकर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये, बाहर बैठे और 3510 की माँग की। कम्पनी ने पुलिस बुला ली – एक जिप्सी सैक्टर 55 से तथा दूसरी बल्लभगढ से आई। मैनेजिंग डायरेक्टर ने सितम्बर से तनखा 3510 करने की कह कर अगस्त के 2000 लेने को कहा। चार घण्टे बाहर बैठ तब मजदूर फैक्ट्री के अन्दर गये।

"एल्पिया पैरामाउन्ट फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर तथा 400 कैजुअल वरकर हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की और महीने में 2-3 दिन तो लगातार 36 घण्टे रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से तो देते ही हैं, महीने में 20-25 घण्टे खा भी जाते हैं। पीने का पानी 15 दिन खारा – शिकायतें करने पर ही मीठा पानी मँगाते हैं।

"एल्पिया पैरामाउन्ट के बड़े साहब तनखा 3510 करने की कह अन्दर लाये थे और अन्दर साहब लोग थोड़े-थोड़े कैजुअल वरकरों को बुला कर कहने लगे कि 500 रुपये बढा कर तनखा 2500 रुपये कर देंगे..... परसनल मैनेजर ने 15 सितम्बर को दो कैजुअल वरकरों को कहलवाया कि गेट पर कोई मिलने आया है। वहाँ पुलिस की गाड़ी मिली – दोनों को गाड़ी में बैठा लिया और परसनल मैनेजर भी बैठ गया। पुलिस वालों और मैनेजर ने डरा-धमका कर उन मजदूरों को सैक्टर-22 श्मशान घाट के पास गाड़ी से उतारा।"

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 3510-4160 रुपये न्यूनतम वेतन के बाद कम्पनी ने डाइकास्टिंग मशीनों पर दो की जगह एक मजदूर से काम करने को कहा। इसके विरोध में ऑपरेटरों ने छुट्टी की तो 10 सितम्बर को 25 डाइकास्टिंग मशीनों में से 5 ही चली। फोरमैन 12 सितम्बर को सुबह मोटरसाइकिल पर ऑपरेटरों को ढूँढते फिर रहा था और ऑपरेटर आपसी तालमेल बढाने के लिये कहीं बातचीतें कर रहे थे।" ***जय भारत मारुति वरकर:*** "प्लॉट 269 सैक्टर-24 स्थित ***(बाकी पेज तीन पर)***

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73